



राजभाषा दर्पण

वर्ष : 2023 * त्रैमासिक * अंक : 2



दक्षिण पूर्व रेलवे

चक्रधरपुर मंडल

रामधारी सिंह 'दिनकर'

रामधारी सिंह 'दिनकर' (23 सितंबर, 1908 - 24 अप्रैल, 1974) हिन्दी के एक श्रेष्ठ कवि, लेखक व निबन्धकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। प्रखर राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता को इनके काव्य की मूल-भूमि मानते हुए इन्हें 'युग-चारण' की भी संज्ञा दी गई है। रामधारी सिंह 'दिनकर' साहित्य के वह प्रबल हस्ताक्षर हैं, जिनकी कलम में सूर्य के समान चमक थी। उनकी कविताएं सिर्फ उनके समय का सूरज नहीं हैं, बल्कि उसकी रौशनी से पीढ़ियां प्रकाशमान होती हैं। आपकी प्रमुख कृतियों में कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, हुंकार, संस्कृति के चार अध्याय, परशुराम की प्रतीक्षा, हाहाकार आदि शामिल हैं। आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार, पद्म भूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि अनेक सम्मान प्राप्त हुए।

कलम, आज उनकी जय बोल – रामधारी सिंह 'दिनकर'

जला अस्थियाँ बारी-बारी
चिटकाई जिनमें चिंगारी
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे
जल-जलाकर बुझ गए किसी दिन
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही सौ लपट दिशाएं
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा
साखी हैं उनकी महिमा के
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल
कलम, आज उनकी जय बोल ।

राजभाषा - ज्ञान

प्रश्न 1 संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा के रूप में कब स्वीकार किया गया?

उत्तर - 14 सितंबर 1949

प्रश्न 2 संविधान के किस अनुच्छेद में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश दिये गए हैं?

उत्तर - अनुच्छेद 351

प्रश्न 3 हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है?

उत्तर - 14 सितंबर

प्रश्न 4 संविधान के किन अनुच्छेदों में राजभाषा संबंधी प्रावधान दिये गए हैं?

उत्तर - अनुच्छेद 120, 210 तथा 343 से 351 तक

प्रश्न 5 राजभाषा संबंधी प्रावधान संविधान के किन भागों में दिये गए हैं?

उत्तर - भाग 5, भाग 6 तथा भाग 17 में

प्रश्न 6 हिन्दी के प्रयोग के पुनरीक्षण के लिए संसदीय राजभाषा समिति की कुल कितनी उप समितियां बनाई गई हैं?

उत्तर - तीन उप समितियां

प्रश्न 7 संघ की राजभाषा क्या है?

उत्तर - संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है

प्रश्न 8 संविधान के किस अनुच्छेद में राजभाषा आयोग गठन संबंधी प्रावधान हैं?

उत्तर - अनुच्छेद 344 (1)

प्रश्न 9 संविधान के किस अनुच्छेद के अनुसार संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया?

उत्तर - अनुच्छेद 344 (4)

प्रश्न 10 संविधान के अनुच्छेद 344 (4) के अनुसार संसदीय समिति में कुल कितने सदस्य होते हैं?

उत्तर - 30 (तीस)

प्रश्न 11 संविधान के अनुच्छेद 344(4) के अनुसार संसदीय समिति में लोकसभा के कितने सदस्य होते हैं?

उत्तर - 20 (बीस)

प्रश्न 12 संविधान के अनुच्छेद 344(4) के अनुसार संसदीय समिति में राज्यसभा के कितने सदस्य होते हैं?

उत्तर - 10 (दस)

प्रश्न 13 अनुच्छेद 344(1) के अनुसरण में राजभाषा आयोग का गठन कब किया गया ?

उत्तर - 07 जून 1955

प्रश्न 14 राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर - बी.जी.खेर

विष्णु प्रभाकर

हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर विष्णु प्रभाकर जी का जन्म 21 जून, 1912 को उत्तर प्रदेश में हुआ था। विष्णु प्रभाकर जी हिंदी साहित्य के एक जाने-माने लेखक रहे। आपको हिंदी साहित्य का ज्ञाता भी कहा जाता है। आपने कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, जीवनी, कविताओं और यात्रा वृत्तांत आदि विधाओं में अपनी कलम खूबसूरती से चलाई है। आप गांधी जी के आदर्शों से प्रभावित रहे हैं। आपने भारतीय अस्मिता को अपनी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है। आपकी प्रमुख रचनाओं में 'धरती अब भी घूम रही है', 'संघर्ष के बाद', 'एक आसमान के नीचे', 'खिलौने', 'चलता चला जाऊंगा', 'अर्धनारीश्वर', 'तट के बंधन', 'संकल्प', 'परछाई', 'समाधि', 'रक्त चंदन', 'प्रकाश और परछाई आदि शामिल हैं। आपको पद्मभूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार आदि अनेक सम्मान प्राप्त हुए। आपने भारतीय अस्मिता को अपनी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है। 11 अप्रैल, 2009 को आपका देहावसान हो गया।

पानी की जाति

- विष्णु प्रभाकर

बी.ए. की परीक्षा देने वह लाहौर गया था। उन दिनों स्वास्थ्य बहुत खराब था, सोचा, प्रसिद्ध डा. विश्वनाथ से मिलता चलूं। कृष्णनगर से वे बहुत दूर रहे थे। सितम्बर का महीना था और मलेरिया उन दिनों यौवन पर था। वह भी उसके मोहचक्र में फंस गया। जिस दिन डा. विश्वनाथ से मिलना था, ज्वर काफी तेज़ था। स्वभाव के अनुसार वह पैदल ही चल पड़ा, लेकिन मार्ग में तबीयत इतनी बिगड़ी कि चलना दूभर हो गया। प्यास के कारण, प्राण कंठ को आने लगा। आसपास देखा, मुसलमानों की बस्ती थी। कुछ दूर और चला, परन्तु अब आगे बढ़ने का अर्थ खतरनाक हो सकता था। साहस करके वह एक छोटी-सी दुकान में घुस गया। गांधी टोपी और धोती पहने हुए था।

दुकान के मुसलमान मालिक ने उसकी ओर देखा और तल्खी से पूछा- “क्या बात है?”
जवाब देने से पहले वह बैंच पर लेट गया। बोला - “मुझे बुखार चढ़ा है, बड़े ज़ोर की प्यास लग रही है, पानी या सोडा, जो कुछ भी हो, जल्दी लाओ!”
मुस्लिम युवक ने उसे तल्खी से जवाब दिया - “हम मुसलमान हैं。”
वह चिनचिनाकर बोल उठा - “तो मैं क्या करूं?”

वह मुस्लिम युवक चौंका, बोला - “क्या तुम हिन्दू नहीं हो ? हमारे हाथ का पानी पी सकोगे ?”
उसने उत्तर दिया, “हिन्दू के भाई, मेरी जान निकल रही है और तुम जात की बात करते हो ! जो कुछ हो, लाओ!”
युवक ने फिर एक बार उसकी ओर देखा और अन्दर जाकर सोड़े की एक बोतल ले आया। वह पागलों की तरह उस पर झपटा और पीने लगा।

लेकिन इससे पहले कि पूरी बोतल पी सकता, उसे उल्टी हो गई और छोटी-सी दुकान गन्दगी से भर गई। लेकिन उस युवक का बर्ताव अब एकदम बदल गया था। उसने उसका मुंह पोंछा, सहारा दिया और बोला, “कोई डर नहीं, अब तबीयत कुछ हल्की हो जाएगी, दो-चार मिनट इसी तरह लेटे रहो, मैं शिकंजी बना लाता हूं।”

उसका मन शांत हो चुका था और वह सोच रहा था कि यह पानी, जो वह पी चुका है, क्या सचमुच मुसलमान पानी था ?

नादिरशाह की सेना ने दिल्ली में कत्ले-आम कर रखा है। गलियों में खून की नदियां बह रही हैं। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। बाजार बन्द है। दिल्ली के लोग घरों के द्वार बन्द किए जान की खैर मना रहे हैं। किसी की जान सलामत नहीं है। कहीं घरों में आग लगी हुई है, कहीं बाजार लुट रहा है; कोई किसी की फरियाद नहीं सुनता। रईसों की बेगमें महलों से निकाली जा रही हैं और उनकी बेहुरमती की जाती है। ईरानी सिपाहियों की रक्तपिपासा किसी तरह नहीं बुझती। मानव हृदय की क्रूरता, कठोरता और पैशाचिकता अपना विकरालतम रूप धारण किए हुए है। इसी समय नादिरशाह ने बादशाही महल में प्रवेश किया।

दिल्ली उन दिनों भोग-विलास का केन्द्र बनी हुई थी। सजावट और तकल्लुफ के सामानों से रईसों के भवन भरे रहते थे। स्त्रियों को बनाव-सिंगार के सिवा कोई काम न था। पुरुषों को सुख भोग के सिवा और कोई चिन्ता न थी। राजनीति का स्थान शेर-शायरी ने ले लिया था। समस्त प्रान्तों से धन खिंच-खिंचकर दिल्ली आता था और पानी की भांति बहाया जाता था। वेश्याओं की चांदी थी। कहीं तीतरों के जोड़ होते थे, कहीं बटेरों और बुलबुलों की पालियां ठन्ती थीं। सारा नगर विलास-निद्रा में मग्न था। नादिरशाह शाही महल में पहुंचा, तो वहां का सामान देखकर उसकी आंखें खुल गयीं। उसका जन्म दरिद्र घर में हुआ था। उसका समस्त जीवन रणभूमि में ही कटा था। भोग-विलास का उसे चस्का न लगा था। कहां रणक्षेत्र के कष्ट और कहां यह सुख-साम्राज्य ! जिधर आंख उठती थी, उधर से हटने का नाम न लेती थी।

संध्या हो गई थी। नादिरशाह अपने सरदारों के साथ महल की सैर करता और अपनी पसन्द की चीजों को बटोरता हुआ दीवाने खास में आकर कारचोबी मसनद पर बैठ गया। सरदारों को वहां से चले जाने का हुक्म दिया। अपने सब हथियार खोलकर रख दिए और महल के दारोगा को बुलाकर हुक्म दिया- मैं शाही बेगमों का नाच देखना चाहता हूं। तुम इसी वक्त उनको सुन्दर वस्त्राभूषणों से सजाकर मेरे सामने लाओ। खबरदार, जरा भी देर न हो! मैं कोई उज्र या इनकार नहीं सुन सकता।

दारोगा ने यह नादिरशाही हुक्म सुना, तो होश उड़ गए। वह महिलाएं जिन पर कभी सूर्य की दृष्टि भी नहीं पड़ी, कैसे इस मजलिस में आएंगी! नाचने का तो कहना ही क्या ! शाही बेगमों का इतना अपमान कभी न हुआ था। हा, नरपिशाच ! दिल्ली को खून से रंगकर भी तेरा चित्त शान्त नहीं हुआ। मगर नादिरशाह के सम्मुख एक शब्द भी जबान से निकालना अग्नि के मुख में कूदना था। सिर झुकाकर आदाब बजा लाया और आकर रनिवास में सब बेगमों को नादिरशाही हुक्म सुना दिया; उसके साथ ही यह इत्तला भी दे दी कि जरा भी ताम्मुल न हो, नादिरशाह कोई उज्र या हीला न सुनेगा ! शाही खानदान पर इतनी बड़ी विपत्ति कभी नहीं पड़ी; पर इस समय विजयी बादशाह की आज्ञा को शिरोधार्य करने के सिवा प्राणरक्षा का अन्य कोई उपाय नहीं था।

बेगमों ने यह आज्ञा सुनी तो हतबुद्धि-सी हो गईं। सारे रनिवास में मातम सा छा गया। वह चहल - पहल गायब हो गई। सैकड़ों हृदयों से इस अत्याचारी के प्रति एक शाप निकल गया। किसी ने आकाश की ओर सहायता - याचक लोचनों से देखा, किसी ने खुदा और रसूल का सुमिरन किया; पर ऐसी एक महिला भी न थी, जिसकी निगाह कटार या तलवार को तरफ गई हो। यद्यपि इनमें कितनी ही बेगमों की नसों में राजपूतानियों का रक्त प्रवाहित हो रहा था; पर इन्द्रियलिप्सा ने 'जौहर' की पुरानी आग ठंडी कर दी थी। सुख भोग की लालसा आत्म-सम्मान का सर्वनाश कर देती है। आपस में सलाह करके मर्यादा की रक्षा का कोई उपाय सोचने की मुहलत न थी। एक-एक पल

भाग्य का निर्णय कर रहा था। हताश होकर सभी ललनाओं ने पापी के सम्मुख जाने का निश्चय किया। आंखों से आंसू जारी थे, दिलों से आहें निकल रही थीं; पर रत्न जटित आभूषण पहने जा रहे थे। अश्रु-सिंचित नेत्रों में सुरमा लगाया जा रहा था और शोक-व्यथित हृदयों पर सुगन्ध का लेप किया जा रहा था। कोई केश गूँथती थीं, कोई मांगों में मोती पिरोती थीं। एक भी ऐसे पक्के इरादे की स्त्री न थी, जो ईश्वर पर अथवा अपनी टेक पर, इस आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस कर सके। एक घंटा भी न गुजरने पाया था कि बेगमात पूरे के पूरे, आभूषणों से जगमगाती, अपने मुख की कान्ति से बेली और गुलाब की कलियों को लजाती, सुगन्ध की लपटें उड़ाती, छमछम करती हुई दीवाने खास में आकर नादिरशाह के सामने खड़ी हो गई।

नादिरशाह ने एक बार कनखियों से परियों के इस दल को देखा और तब मसनद की टेक लगाकर लेट गया। अपनी तलवार और कटार सामने रख दीं। एक क्षण में उसकी आंखें झपकने लगीं। उसने एक अंगड़ाई ली और करवट बदल ली। जरा देर में उसके खर्राटों की आवाजें सुनाई देने लगीं। ऐसा जान पड़ा कि वह गहरी निद्रा में मग्न हो गया है। आधे घंटे तक वह पड़ा सोता रहा और बेगमें ज्यों-की-त्यों सिर नीचा किए दीवार के चित्रों की भांति खड़ी रहीं। उनमें दो-एक महिलाएं जो ढीठ थीं, घूँघट की ओट से नादिरशाह को देख भी रही थीं और आपस में दबी जबान से कानाफूसी कर रही थीं—कैसा भयंकर स्वरूप है! कितनी रणोन्मत्त आंखें हैं! कितना भारी शरीर है! आदमी काहे को है, देव है! सहसा नादिरशाह की आंखें खुल गईं। परियों का दल पूर्ववत् खड़ा था। उसे जागते देखकर बेगमों ने सिर नीचे कर लिए और अंग समेटकर भेड़ों की भांति एक-दूसरे से मिल गईं। सबके दिल धड़क रहे थे कि अब यह जालिम नाचने-गाने को कहेगा, तब कैसे क्या होगा! खुदा इस जालिम से समझे! मगर नाचा तो न जाएगा। चाहे जान ही क्यों न जाय। इससे ज्यादा जिल्लत अब न सही जाएगी।

सहसा नादिरशाह कठोर शब्दों में बोला—ऐ खुदा की बन्दियों, मैंने तुम्हारा इम्तहान लेने के लिए बुलाया था और अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि तुम्हारी निस्बत मेरा जो गुमान था, वह हर्फ-ब-हर्फ सच निकला। जब किसी कौम की औरतों में गैरत नहीं रहती, तो वह कौम मुर्दा हो जाती है। देखना चाहता था कि तुम लोगों में कुछ गैरत बाकी है या नहीं। इसलिए मैंने तुम्हें यहां बुलाया था। मैं तुम्हारी बेहुरमती नहीं करना चाहता था। मैं इतना ऐश का बन्दा नहीं हूँ, वरना आज भेड़ों के गल्ले चराता होता। न इतना हवसपरस्त हूँ, वरना आज फारस में सरोद और सितार की तानें सुनता होता, जिसका मजा मैं हिन्दुस्तानी गाने से कहीं ज्यादा उठा सकता हूँ।

मुझे सिर्फ तुम्हारा इम्तहान लेना था। मुझे यह देखकर सच्चा मलाल हो रहा है कि तुममें गैरत का जौहर बाकी न रहा। क्या यह मुमकिन न था कि तुम मेरे हुक्म को पैरों तले कुचल देतीं? जब तुम यहां आ गयीं तो मैंने तुम्हें एक और मौका दिया। मैंने नींद का बहाना किया। क्या यह मुमकिन न था कि तुममें से कोई खुदा की बन्दी इस कटार को उठाकर मेरे जिगर में चुभा देती। मैं कलामे पाक की कसम खाकर कहता हूँ कि तुममें से किसी को कटार पर हाथ रखते देखकर मुझे बेहद खुशी होती, मैं उन नाजुक हाथों के सामने गर्दन झुका देता! पर अफसोस है कि आज तैमूरी खानदान की एक बेटी भी यहां ऐसी नहीं निकली, जो अपनी हुरमत बिगाड़ने वाले पर हाथ उठाती! अब यह सलतनत जिन्दा नहीं रह सकती। इसकी हस्ती के दिन गिने हुए हैं। इसका निशान बहुत जल्द दुनिया से मिट जाएगा। तुम लोग जाओ और हो सके, तो अब भी सलतनत को बचाओ, वरना इसी तरह हवस की गुलामी करते हुए दुनिया से रुखसत हो जाओगी।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त, 1886 को उत्तर प्रदेश में हुआ था। आप खड़ी बोली के प्रथम महत्वपूर्ण कवि थे। मैथिली शरण गुप्त जी स्वभाव से ही लोकसंग्रही कवि थे और अपने युग की समस्याओं के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील रहे। आपका काव्य एक ओर वैष्णव भावना से परिपोषित था, तो साथ ही राष्ट्रीय नैतिक चेतना से अनुप्राणित भी था। आपने काव्य के क्षेत्र में अपनी लेखनी से सम्पूर्ण देश में राष्ट्रभक्ति की भावना भर दी थी। आपने राष्ट्रप्रेम की इस धारा को देश भर में प्रवाहित किया था। हिन्दी में मैथिली शरण गुप्त की काव्य साधना सदैव स्मरणीय रहेगी। गुप्त जी युग-प्रतिनिधि राष्ट्रीय कवि रहे हैं। समस्त सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक हलचलों का प्रतिनिधित्व आपकी रचनाओं में मिल जाता है। आपके काव्य में राष्ट्र की वाणी मुखर हो उठी है। आपकी दृष्टि में देश के समक्ष सबसे बड़ी समस्या दासता से मुक्ति थी। आपकी प्रमुख कृतियों में भारत-भारती, जयद्रथ वध, साकेत, पंचवटी, यशोधरा, जयभारत, विष्णुप्रिया, अनघ, तिलोत्तमा एवं चरणदास आदि शामिल हैं। आपको पद्मभूषण, हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, मंगला प्रसाद पारितोषिक, साहित्य वाचस्पति आदि अनेक सम्मान प्राप्त हुए। आप राज्यसभा के सदस्य भी मनोनीत हुए। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त जी का देहावसान 12 दिसंबर, 1964 को हो गया।

भाषा का संदेश

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

भाषा का संदेश सुनो, हे
भारत! कभी हताश न हो।
बता क्या है फिर अरुणोदय से
उज्ज्वल भाग्याकाश न हो॥
दिन छोटे क्यों न हों तुम्हारे किंतु आप तुम खरे रहो,
साथ छोड़ दे क्यों न सफलता किंतु धैर्य तुम धरे रहे।
खाली हाथ हुए, हो जाओ, पर साहस से भरे रहो,
हरि के कर्मक्षेत्र! हरे हो और सर्वदा हरे रहो॥
बात क्या कि फिर देश तुम्हारा,
पूरा पुनर्विकाश न हो।
भाषा का संदेश सुनो,
हे भारत! कभी हताश न हो॥
मार्ग सूझते नहीं, न सूझे, किंतु अटल तुम अड़े रहो,
आगे बढ़ना कठिन हुआ तो हटो न पीछे, खड़े रहो।
विविध बंधनों में जकड़े हो, रहो, किंतु तुम कड़े रहो,
जी छोटा मत करो, बड़ों के वंशज हो तुम बड़े रहो॥
बात क्या कि फिर यहाँ तुम्हारा,
पावन पूर्व प्रकाश न हो।

भाषा का संदेश सुनो, हे
भारत! कभी हताश न हो॥
तुम में हो या न हो शेष कुछ पर हो तो तुम आर्य अभी,
सूख गया तनु तक तो सूखे, रक्त-मांस हो या कि न भी।
अरे, हड्डियाँ तो शरीर में बनी हुई हैं वही अभी—
जिनसे विश्रुत वज्र बना था, सिद्ध हुए सुर-कार्य सभी!
बात क्या कि फिर देश तुम्हारे,
पाप पतन का नाश न हो।
भाषा का संदेश सुनो,
हे भारत! कभी हताश न हो॥
नहीं रहे अधिकार तुम्हारे, न रहें, पर वे मिटे नहीं,
जन्म-सिद्ध अधिकार किसी के मिट सकते हैं भला कहीं?
भूमि वहीं है, जहां निरंतर सभी सिद्धियाँ सिद्ध रहीं,
जगत जानता है कि हुआ था आत्मबोध उत्पन्न वहीं॥
बात क्या कि फिर छिन्न-भिन्न यह,
पराधीनता-पाश न हो।
भाषा का संदेश सुनो,
हे भारत! कभी हताश न हो ॥

शब्द ज्ञान

अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द	अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द
Amendment	संशोधन	Arrears	बकाया
Affidavit	शपथ-पत्र	Attention	ध्यान देना
Acknowledgement	पावती	Authorized	प्राधिकृत
Ad-hoc	तदर्थ	Approval	अनुमोदन
Backlog	पिछला बकाया	Basic	मूल
Circular	परिपत्र	Charge sheet	आरोप पत्र
Compensation	क्षतिपूर्ति	Concurrence	सहमति
Deduction	कटौती	Disbursement	संवितरण
Demand	मांग	Devotion	निष्ठा
Effective	प्रभावी	Extension	विस्तार
Implementation	कार्यान्वयन	Finding	निष्कर्ष
General Order	सामान्य आदेश	Gazette	राजपत्र
Haulage	ढुलाई	Honorarium	मानदेय
Imprest Account	अग्रदाय लेखा	Instruction	अनुदेश

संरक्षक

अरुण जातोह राठौड़

मंडल रेल प्रबंधक

मार्गदर्शन

विनय कुजूर

अपर मंडल रेल प्रबंधक

सह

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

‘राजभाषा दर्पण’ में प्रकाशनार्थ रचनाएं srrba.ckp@gmail.com पर ई-मेल की जा सकती हैं अथवा राजभाषा विभाग, चक्रधरपुर को भेजी जा सकती हैं।

प्रकाशक : राजभाषा विभाग , चक्रधरपुर

संपर्क : 9771482002

: 72379 (रेलवे)